प्राचीन मिथिलामे शक्तिपूजा

शिव कुमार मिश्र

आदिकालसँ मिथिला धार्मिक आ दार्शनिक क्रियाकलापक केन्द्र रहल अछि। एतए शक्ति अर्थात् देवीक पूजा प्राचीने कालसँ प्रचलित अछि। वेद सभमे जिनका ब्रह्म कहल गेल छनि ओएह परमात्मिका छथि। देवी भागवत पुराणमे कहल गेल अछि जे 'शक्ति करोति ब्रह्माण्डम्' अर्थात् शक्ति ब्रह्माण्डकेँ रचैत छथि।[1] विष्णुमे सात्विकी शक्ति, ब्रह्मामे राजसी शक्ति आ शिवमे तामसी शक्ति सगुण रूप धारण करैत अछि। देवता सभ सेहो शक्तिसँ युक्त भए अपन-अपन कार्य करैत छथि आ जे शक्तिसँ हीन छथि ओ असमर्थ छथि। शक्तिक बिना साक्षात् शिव सेहो 'शव' बनि जाइत छथि। शास्त्रक इएह कथन अछि। अतः शक्तिक महत्ता अनुपम अछि।

शास्त्र सभमे शक्तिकेँ नारीक रूपमे वर्णन करैत ओकर दिव्य स्वरूपकेँ सर्वाधिक महत्व प्रदान कएल गेल अछि। सृष्टिक प्रक्रियामे नारीक योगदान स्पष्टतः अभूतपूर्व अछि। शक्तिक प्रारम्भिक रूप शिवक पत्नी उमा अथवा पार्वती छथि जे जगज्जननी कहल जाइत छथि। वस्तुतः हुनक तान्त्रिक एवम् दार्शनिक विकास शक्तिक रूपमे भेल अछि। अतः शक्ति ओ शिवक अभिन्नता स्वाभाविक अछि। शक्तिक रूपमे विकसित भए पार्वती 'कपिलावरणा,' काली ओ सिंहवाहिनी दुर्गा बनि गेलीह। बादमे ई असीमित शक्तिसँ सम्पन्न महाकालीक रूप ग्रहण कएलनि। एतए ई स्मरणीय अछि जे शिव सेहो महाकाल कहल जाइत छथि। एहि लेल शक्ति ओ शिवक एकत्मकता स्वयंसिद्ध अछि। वस्तुतः मिथिला मे विष्णु ओ शिवक अतिरिक्त यदि कोनो देवताक महिमा ओ गरिमा चरमसीमापर पहुँचल तँ ओ मात्र शक्ति अथवा दुर्गाक। वैष्णव ओ शैवधर्म जकाँ मैथिल समाज मे शक्तिक प्रभाव सेहो रहल अछि। शक्तिक पूजा ओ उपासना कएनिहारलोकनि शाक्त कहल गेलाह।

कालान्तरमे इएह शक्ति-सम्प्रदाय हिन्दू धर्मक प्रभावकारी ओ चमत्कारी सम्प्रदाय बनि गेल। शनैः शनैः शक्तिक संग कतिपय नाम जुटि गेल। काली, चामुण्डा, देवी, शिवानी, रूद्राणी, भवानी आदि विविध नाम हुनक शैव सम्बन्धकेँ व्यक्त करैत अछि। एकरा संग-संग लक्ष्मी, वैष्णवी, ब्राह्मी, इन्द्राणी, गायत्री प्रभृति विविध नाम सेहो हुनका प्रदान कएल गेल छनि जे हुनक स्वतंत्र अस्तित्वकेँ स्पष्ट करैत छनि, कोनो दोसर देवताक प्रभावकेँ नहि। 'वाग्देवी' सरस्वती सँ सेहो हुनक सम्बन्ध स्थापित कएल जाइत छनि तथा हुनका बुद्धि ओ प्रज्ञाक देवी मानल जाइत छनि। मध्यकाल धरि शक्तिक उपासना बड़ बेशी बढ़ि गेल ओ हुनका सृष्टि, पालन तथा संहार-कर्त्रीक रूप प्रदान कए हुनकर उपासना-आराधना कएल जाए लागल।

मिथिलामे आने देवता जकाँ शक्तिदेवीक रूप सेहो आदिए काल सँ स्पष्ट होमए लागल छल। उमा, पार्वती, अम्बिका, हेमवती, रुद्राणी ओ भवानी सदृश नाम शक्तिक रूपमे वैदिक साहित्यमे भेटैछ। वाजसनेयी संहितामे 'अम्बिका'क रूपमे देवीक उल्लेख भेल अछि, जतए हुनका रुद्रक बहिन कहल गेल छनि। **तैत्तरीय** ओ **शतपथ ब्राह्मण** मे सेहो अम्बिकाकेँ रुद्रक बहिन कहल गेल अछि।[2] ओना **तैत्तरीय आरण्यक**मे रूद्रक पत्नी पार्वतीक सन्दर्भ भेटैछ। **केन उपनिषद**मे 'उमा' शब्दक उल्लेख भेल अछि जतए हिनका विद्यादेवीक रूपमे मानि हेमवती अर्थात् हिमालयक पुत्री कहल गेल छनि।[3] हिनक प्रादुर्भाव देवतालोकनिकेँ ई शिक्षा देबाक लेल होइत अछि जे अपन तुच्छ शक्तिपर हुनका लोकनिकेँ कखनो घमण्ड नहि करबाक चाहियनि, कारण सर्वशक्तिमान परब्रह्मक शक्तिक ओलोकनि प्रतीक मात्र छथि। ओहि परब्रह्म नियन्ताक निर्देशन मे रहिकए ओलोकनि अपन शक्तिक प्रदर्शन करबामे समर्थ होइत छथि। अस्तु, उमा-हेमवती विद्या ओ ज्ञानक अधिष्ठात्री देवी थिकीह।

पुराणक उद्धरण सभसँ सेहो मिथिलामे शक्तिपूजाक प्राचीनताक ज्ञान होइत अछि। पुराणसभमे कहल गेल अछि जे वैशम्पायन ओ हुनक भागिन याज्ञवल्क्यमे वैमनस्यक कारणेँ याज्ञवल्क्य अपन गुरु ओ मामसँ उपदिष्ट यजुर्वेदक परित्याग कए देलनि। **ब्रह्मवैवर्त्तपुराण**[4] ओ **देवीभागवतपुराण**मे विदित अछि जे याज्ञवल्क्य वेद-विहीन भए गेलाक उपरान्त 'वाग्देवी' सरस्वतीक आराधन कएलनि जकर परिणामस्वरूप ओ वाजसनेयी संहिताक नाम सँ अभिहित शुक्ल यजुर्वेदक रचना आ संकलन कएलनि। **देवीभागवतपुराण**क एकटा दोसर उद्धरण सँ विदित अछि जे विदेहराज निमि शक्तिक आराधन कएलनि जाहि सँ भगवती जगदम्बिका हुनका पर प्रसन्न भए दर्शन देलथिन। एहि पुराणमे ईहो विदित अछि जे गौतममुनि अपना आश्रममे भगवती गायित्री देवीक आराधना करैत छलाह। हुनक आश्रम मिथिला (प्रायः आधुनिक ब्रह्मपुर गाम, जिला-दरभंगा)मे स्थित छल। एक बेर बड़ पैघ अकाल पड़ल जकर परिणामस्वरूप जीव जन्तुकेँ अतिशय कष्ट भोगए पड़लैक। एहि सँ सन्तप्त भए ब्राह्मणलोकनि गौतम मुनिक आश्रम पहुँचलाह ओ एहि कष्टक निवारणक लेल प्रार्थना कएलनि। तत्पश्चात् गौतममुनि देवीकेँ प्रसन्न करबाक लेल कठोर तप कएलनि। हुनक स्तुति सँ प्रसन्न भए भगवती हुनका समक्ष उपस्थित भेलीह ओ ब्राह्मणलोकनिक कष्ट निवारण कएलनि। **देवी भागवत पुराण**मे कहल गेल अछि जे विदेहमे भद्रकालिकाक रूपमे भगवतीक पूजा होइत अछि।[5] **मिथिला दर्पण**मे कोइलख (मधुबनी) नामक एकटा शक्तिपीठकेँ भद्रकालिका स्थान कहल गेल अछि[6] जाहि आधारपर किछु विद्वानलोकनिक विचार छनि जे कोइलखमे प्राचीन कालमे एकटा शक्तिपीठ छल होएत जकर उल्लेख **देवीभागवत**मे भेल अछि। मुदा भगवतीपुर मे एगारहम शताब्दीक एकटा भद्रकालिकाक मूर्त्ति भेटैत अछि जकर समता **देवीभागवत**क भद्रकालिक सँ होएबाक चाही। देवी भागवत मे एक ठाम दुर्गास्थानक उल्लेख अछि जकर समता मैथिल पण्डितलोकनि उच्चैठक (मधुबनी) दुर्गास्थानसँ कएलनि अछि। एहि स्थान पर सिंहवाहिनी दुर्गाक मूर्त्ति अछि जकर समय दसम-एगारहम शताब्दी

मानल गेल अछि। एवम्प्रकारेँ हम देखैत छी जे पुराणसभसँ मिथिलामे शक्ति आराधनाक ठोस प्रमाण प्राप्त होइछ।

बौद्ध साहित्यसँ मिथिलामे यक्षिणीक रूपमे देवी पूजाक प्रमाण भेटैछ। **महाजनक जातक**[7] मे देवताक बेटी मणिमेखलाकेँ मिथिलासँ सम्बन्धित मानल गेल अछि। हुनक नियुक्ति समुद्रक अभिभावकक रूपमे भेल छल। हुनका कहल गेल जे ओ ओहन व्यक्ति पर ध्यान राखथु जिनका मे अपना मायक प्रति आदर करबाक सद्गुण हो। एहि सँ मातृदेवीक प्रति आराधनाक प्रमाण सिद्ध होइछ।

मिथिला क्षेत्रमे कतेको स्थानसभसँ विविध प्रकारक पुरावशेष, यथा-मूर्ति, मृण्मूर्ति, लघुमूर्ति, मुद्रा, मुहर आदि प्राप्त भेल अछि जाहिमे शक्तिपूजा सँ सम्बन्धित सेहो बड़ बेशी पुरावशेष भेटैछ। शक्तिपूजाक सभसँ पहिल पुरातात्विक प्रमाण लौरियानन्दन गढ़ सँ प्राप्त भेल अछि। एहि ठाम आठम शताब्दी ईसापूर्वक एकटा स्त्रीक स्वर्णफलक भेटल अछि जकरा पृथ्वी देवी कहल गेल अछि।[8] एकटा एहने स्वर्णफलक सीरिया मे भेटल अछि जे तेरहमशताब्दी ईसापूर्वक अस्टार्टे देवीक मूर्ति अछि।[9] एहि सँ स्पष्ट संकेत भेटैछ जे शक्तिक रूपमे पृथ्वीदेवीक पूजा ओहि कालक मिथिला मे विद्यमान छल। बसाढ़ (वैशाली) सँ एकटा स्त्रीक मूर्तिक फलक प्राप्त भेल अछि जे कमल पर ठाढ़ि अछि।[10] एकर समय तेसर शताब्दी ईसापूर्व मानल गेल अछि। कमल पर स्थित रहबाक कारणे एकरा लक्ष्मी देवीक फलक कहल गेल अछि जे एहि क्षेत्रक सभसँ पहिल प्रमाण थिक। एहने दूटा आओर मूर्ति वैशाली सँ प्राप्त भेल अछि जकर समय दोसर शताब्दी ई० पूर्व सँ पहिल शताब्दी ई० धरि मानल गेल अछि। बलिराजगढ़[11] (मधुबनी) सँ एकटा स्त्रीक फलक प्राप्त भेल अछि जाहिमे स्त्री मकर पर आरूढ़ अछि। मकर गंगा देवीक वाहन छनि जाहि सँ स्पष्ट होइछ जे ई गंगादेवीक फलक अछि। एकर समय दोसर शताब्दी ई० पू० मानल गेल अछि। एहिठाम सँ एकटा दोसर मूर्ति भेटल अछि जकरा नैगमेष कहल गेल अछि। नैगमेषकेँ षष्ठी देवी अर्थात् छठिदेवीक पति कहल गेल अछि। एहि तरहेँ एतए गंगादेवी ओ षष्ठी देवीक आराधनाक प्रमाण भेटैछ। वैशालीसँ प्राप्त एकटा मुहर पर वस्त्रसँ सुसज्जित एकटा देवीक चित्र भेटैत अछि जे कमलक पैघ डंटीपर स्थित अछि।[12] एहिदेवीकेँ लक्ष्मीदेवी कहल गेल छनि। गुप्तवंशी सम्राट प्रथम चन्द्रगुप्तक स्वर्णमुद्रा पर सिंहवाहिनी दुर्गाक चित्रक संग 'लिच्छवय:' अंकित अछि जाहि पर डा. अनन्त सदाशिव अल्तेकर महोदयक विचार छनि जे वैशालीक लिच्छवि राजवंशक कुलदेवी सिंहवाहिनी दुर्गा छलीह।[13] ई मुद्रा चारिम ईस्वीक अछि। मधुबनी जिलाक खोजपुर गाम सँ पाँचम शताब्दीक एकटा दुर्गाक मूर्त्ति प्राप्त भेल अछि। एहिमे अभिलेख सेहो अछि जकरा आधार पर डी. सी. सरकार महोदयक मत छनि जे बारहम-तेरहम शताब्दीमे ई लिखल गेल अछि।[14]

उपर्युक्त पुरावशेषक अतिरिक्त मिथिलाक अन्यान्य स्थान सभमे सेहो प्राचीन कालक शक्ति आराधनासँ सम्बन्धित मूर्ति भेटैत अछि। भगवतीपुरक (मधुबनी) एगारहम शताब्दीक शिव-पार्वती ओ भद्राकालिकाक मूर्ति,[15] भीठ भगवानपुरमे दसम-एगारहम शताब्दीक शिव-पार्वती ओ लक्ष्मी-सरस्वतीक मूर्ति, [16] मंगरौनी (मधुबनी) मे एगारहम शताब्दीक तारादेवीक मूर्ति, [17] देवहार (मधुबनी) गामक मुक्तेश्वर स्थान स्थित दसम-एगारहम शताब्दीक पार्वतीक मूर्ति,[18] फुलहर (मधुबनी) गामक गिरिजास्थान मे एगारहम शताब्दीक काली ओ पार्वती मूर्ति, भैरव बलिया (मधुबनी) मे बारहम शताब्दीक लक्ष्मी ओ सरस्वतीक मूर्ति, कोइलख गाममे बारहम शताब्दीक अष्टभुजी चामुण्डा, मधुबनी बाजार मे दसम शताब्दीक शिव पार्वतीक मूर्ति,[19] कटरागढ़ (मुजफ्फरपुर) मे पालकालीन चामुण्डादेवीस्थान, सिमरिया भिण्डी (समस्तीपुर) मे अष्टभुजी दुर्गाक मूर्ति[20] आदि शक्तिपूजाक विशिष्ट प्रमाण अछि। बेगूसराय जिलाक जयमंगला स्थान सेहो प्राचीन काल सँ महत्वपूर्ण सिद्धपीठ रहल अछि। एहि जिलामे आनो स्थान सभमे पालवंशी राजासभक समकालीन मूर्ति सभ भैटैत अछि। सहरसा जिलाक महिषी स्थित उग्रतारास्थान सेहो प्राचीन सिद्धपीठ अछि। कहल जाइछ जे एही स्थान पर आदि शंकराचार्य ओ महान् दार्शनिक आचार्य मण्डन मिश्रक मध्य शास्त्रार्थ भेल छल।

प्राचीन साहित्यिक एवम् पुरातात्विक साक्ष्यक संग-संग आनो साक्ष्य सभसँ प्राचीन मिथिलामे शक्तिपूजाक संकेत भेटैत अछि। **पीठ निर्णय**मे कहल गेल अछि जे मिथिला ओ भूमि थिक जतए देवीक बामा कान्ह खसल छलनि।[21] मिथिला मे कौशिकी एवम् गण्डकीकेँ सेहो शक्तिपीठ मानल जाइत अछि, कारण एतए सतीक अंग खसल छलनि।[22] तिब्बती यात्री धर्मस्वामीक यात्रावृतान्त सँ संकेत भेटैछ जे कर्णाटवंशी शासकलोकनिक समयमे मिथिलामे तन्त्रक प्रयोग विस्तृत रूपसँ होइत छल। नरसिंहठाकुरक **ताराभक्ति सुधार्णव** नामक ग्रन्थ एवम् तत्कालीन तारादेवीक मूर्त्ति सभसँ एकर पुष्टि होइछ।

एवम्प्रकारेँ प्रस्तुत साहित्यिक एवम् पुरातात्विक साक्ष्य सभसँ सिद्ध होइत अछि जे प्राचीन मिथिलामे शक्तिक पूजा पृथ्वी, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती, काली, भद्रकालिका, अम्बिका, गायित्री, कौशिकी, गंगा, गण्डकी, तारा, उमा, चामुण्डा प्रभृतिक रूपमे होइत रहल। पूर्वमध्यकालमे शक्तिक प्रभाव समाजमे ततेक बढ़ि गेल जे तत्कालीन मैथिल विद्वान ज्योतिरीश्वर ठाकुर अपन **वर्णरत्नाकर**मे वर्णित अठारह पुराणक सूचीमे **देवीपुराण** ओ **कालिकापुराण**केँ स्थान देलनि अछि। बूझि पड़ैछ जे मैथिल समाजमे शक्तिक प्रधानताक कारणे अठारह पुराणक सूचीमे **भागवतपुराण**क स्थान पर **देवीभागवत पुराण**क प्रमुखता देबाक परम्परा स्थापित भए गेल। महाकवि विद्यापतिक रचना सभ सँ स्पष्ट होइछ जे ओहि कालमे शक्तिक प्रभाव मिथिलामे चरमोत्कर्ष पर छल। पुराणसभ विशेष कए **मार्कण्डेयपुराण**मे वर्णित देवीक विविध रूपक एतए स्पष्ट छाप छल जकर परम्परा बादोमे

विद्यमान रहल। **मार्कण्डेयपुराण**क देवीमहात्म्यक पाठ एतए दैनिक जीवनमे होमए लागल। बादमे तँ शक्तिपूजाक एतेक विकास भेल जे आन सभ पूजा गौण भए गेल। प्राय: सम्पूर्ण मिथिलाक कुलदेवी शक्तिए भए गेल छथि। बिना हुनक आराधना कएने कोनो धार्मिक वा सामाजिक काज आरम्भ कएनाइ असम्भव अछि।

सन्दर्भ-संकेत

1. **देवीभागवत पुराण**, गुरुमण्डल ग्रन्थमाला, कलकत्ता, 1960, 1-8-37
2. **वाजसनेयी संहिता** (महीधरक टीका सहित) : सं० ए० वेबर, लंदन, 1852, 3-57; **शतपथ ब्राह्मण**, सं० ए० वेबर, वाराणसी, 1964, 2.6.29 : अम्बिका वै नामास्य रुद्रस्य स्वसा।
3. **केन उपनिषद**, निर्णय सागर प्रेस, बंबई, 3-12 : स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम बहुशोभमानामुमां हेमवतीं तां होवाच किमेतद्यक्षमिति।
4. **ब्रह्मवैवर्त पुराण**, सं० जीवानन्द विद्यासागर भट्टाचार्य, कलकत्ता, 1888, 5: वाग्देवतायाः स्तवनं श्रूयतां सर्वकामदम्। महामुनिर्याज्ञवल्क्यो येन तुष्टाव तां पुरा। गुरु शापच्च समुनिर्हत विद्यो वभूवह। ....
5. **देवीभागवत पुराण**, 38.9 : वैदेहे भद्रकालिका।
6. रास बिहारी दास, **मिथिला दर्पण**, दरभंगा, 1915, भाग - 1, पृ0 47
7. **जातक**, सं० ई० बी० कॉवेल, कैम्ब्रिज, 1907, VI, पृ० 19-37.
8. **आर्कियोलोजिकल सर्वेऑफ इण्डिया** एनुअल रिपोर्ट 1906-07, 1909, चित्र - 4.
9. ई० न्यूमेन, **दि ग्रेट मदर**, प्लेट - 125; जर्नल ऑफ दि बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना, LXIII-IV, 541.
10. **आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया**-एनुअल रिपोर्ट - 1913-14, 1917, प्लेट - XLIV-I.
11. **इण्डियन आर्कियोलोजी-ए रिव्यू**, 1962-63, प्लेट - 10.
12. **आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया** एनुअल रिर्पोट - 113-14, 1917, पलेट - XLVIII एवम् - 1.
13. अनन्त सदाशिव अल्तेकर, **गुप्तकालीन मुद्राएँ**, पटना, 1954, पृ0 23.

14. ज०बि०रि०सो०, XXXVII, पार्ट 3-4, पृ0 10-13

15. विजयकान्त मिश्र, **मिथिला : आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर**, इलाहाबाद, 1978, पृ0 35-39.

16. ओतहि।

17. ओतहि।

18. शिवकुमार मिश्र, **एजुकेशनल आयडियाज एण्ड इन्स्टीच्यूशन्स इन एन्सिएण्ट इण्डिया**, भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली - 1976, एपेन्डिक्स।

19. विजय कान्त मिश्र, ओतहि।

20. **इण्डियन आर्कियोलोजी ए. रिव्यू**, 1974-75, पृ0 68

21. **जर्नल ऑफ दि एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल**, कलकत्ता, XIV, 36.

22. ओतहि, पृ० 35, 40, 88.



जिज्ञासा

जिज्ञासा

मैथिली अर्धवार्षिक शोधप्रधान पत्रिका

वर्ष 2 अंक 4 जुलाइ-दिसम्बर 1996

जिज्ञासा

मैथिली अर्धवार्षिक शोधप्रधान पत्रिका

वर्ष 2 जुलाइ-दिसम्बर 1996 अङ्क 4

आषाढ़-अगहन 1918 शक

सम्पादक

गोविन्द झा

सहायक सम्पादक

मोहन भारद्वाज

प्रबन्ध-सम्पादक

वेदनाथ झा

दिग्दर्शक

आनन्द मिश्र

23-2-97

प्रकाशक

तन्त्रवती गीता भवन

सेन्टर फार द स्टडी ऑफ इण्डियन ट्रैडिसन्स

राँटी, मधुबनी

विषयानुक्रम

